Dr.Raman Kumar Thakur
Assistant professor (Guest)
Department of Economics,
D. B. College, Jaynagar, Madhubani.
L.N.M.U.DARBHANGA.

Class:-B.A.part-2 (General & subsidiary)

Date:- 30 May 2020

Topic:- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व
(Importance of agriculture in Indian Economy)

→भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की 'रीढ' मानी जाती है। भारतीय कृषि के संबंध में महाकवि 'घाघ' ने कहा है "उत्तम खेती मध्यम बान निषिद्ध चाकरी भीख निदान" । भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व निम्नलिखित बातों से परिलक्षित होता है जिसे निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है:-

1) राष्ट्रीय आय में योगदान
(Contribution in National income):- कृषि क्षेत्र, भारत की राष्ट्रीय आय का आज भी एक प्रमुख स्रोत है। योजना काल में राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान विभिन्न वर्षो में घटता गया है । सन 1950- 51 में कृषि क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में योगदान 59% था परंतु 2006-07 में यह कम होकर 18.5% रह गया है।

2) रोजगार का प्रमुख स्रोत

(Main Source of Employment):- भारत जैसे अर्ध- विकसित देश में जहां पर की पूंजी की कमी की वजह से कृषि क्षेत्र का धीमा विकास होता है और जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है वहां रोजगार के दृष्टिकोण से कृषि ही रोजगार का प्रमुख स्रोत रहा है । भारतीय कृषि 52% कार्यशील जनसंख्या को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने का स्रोत रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग पदार्थों के व्यापार, परिवहन आदि में लगकर अपनी आजीविका चलाते हैं। इसलिए भारतीय कृषि देश के लोगों के लिए जीवन- निर्वाह का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

3) राष्ट्रीय आय में कृषि का अंश:- भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान काफी अधिक है किंतु यह धीरे-धीरे कम होता जा रहा है ।1950- 51 में यह 55.40% था जो 2008-09 में औसत आधार पर घटकर 17.0% रह गया। भारत में कृषि क्षेत्र के जीडीपी का 0.3% भाग कृषि शोध पर व्यय किया जाता है, जबकि अमेरिका में यह 4% है।
4) औद्योगिक विकास के लिए कृषि का महत्व:- भारत के प्रमुख उद्योगों को कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। सूती और पटसन वस्त्र उद्योग, चीनी, वनस्पति तथा बागान उद्योग, आदि प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। हथकरघा, बुनाई, तेल निकालना, चावल कुटना, आदि बहुत से लघु और कुटीर उद्योगों को भी कृषि से ही कच्चा माल प्राप्त होता है । अतः देश के औद्योगिक विकास के लिए भी कृषि का योगदान महत्वपूर्ण हैं।

5) आर्थिक विकास का आधार:- भारत की कृषि देश के आर्थिक विकास का आधार है इसका कारण यह है कि एक कृषि क्षेत्र के विकास अन्य क्षेत्रों के आर्थिक विकास के लिए पूंजी प्राप्त होती है जहां उद्योग के लिए कच्चे माल की उपलब्धता कृषि से ही प्राप्त होता है।

6). पूंजी निर्माण:- हमारे देश की अधिकतर पूजी कृषि में लगी हुई है स्थाई पूंजी की दृष्टि से खेतों का स्थान देश में सबसे ऊंचा है। देश की करोड़ों रुपए की पूंजी सिंचाई के साधनों, पशुओं ,खेती के औजारों ट्रैक्टर तथा अन्य प्रकार की कृषि मशीनों, गोदाम आदि में लगी हुई है। कृषि क्षेत्र का मानवीय पूंजी के

निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है इस क्षेत्र के द्वारा श्रमिकों को उचित भोजन प्राप्त होता है । साथ ही इसके फलस्वरूप उनकी कुशलता में भी वृद्धि होती है।

7). खाद्य सामग्री की पूर्ति:- कृषि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना है। भारत में इस समय विशाल जनसंख्या के लिए खदानों की आपूर्ति कृषि द्वारा ही प्राप्त होती है । यद्यपि अब भारत खाद्यान्नों की आपूर्ति में आत्मनिर्भर हो गया है।

8) सामाजिक तथा राजनीतिक महत्व:- भारतीय कृषि के विकास में सामाजिक तथा राजनीतिक महत्व भी बहुत अधिक है देश के लगभग तीन चौथाई मतदाता गांव में निवास करते हैं इसलिए विभिन्न राजनीतिक दल कृषि के विकास द्वारा उनकी उन्नति के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील रहते हैं।

9). बचत का स्रोत:- भारतीय कृषि हरित क्रांति के पश्चात कृषि बचत का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है । अभी तक हरित क्रांति का प्रभाव केवल धनी कृषको पर ही पड़ रहा है हरित क्रांति के पश्चात वे अधिक धनी हो गए हैं।

10). राजस्व में योगदान:- भारतीय कृषि से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए का राजस्व कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है। इसके अलावा कृषि आय कर तथा कृषि से निर्मित वस्तुओं के निर्यात पर 'निर्यात कर' से भी सरकार को आय प्राप्त होती है।

उपर्युक्त बातों को स्पष्ट करने के बाद 'निष्कर्ष'रूप में हम यह कह सकते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व अहम हैं. साथ ही जिस अनुपात से भारत में जनसंख्या वृद्धि हो रही है उसी अनुपात से कृषि क्षेत्र में भी नई-नई तकनीकों ,उपकरणों आदि कृषि सामग्री के विकास हेतु ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि आने वाले समय में एक विशाल जनसंख्या को खाद्यान्न की आपूर्ति की जा सके । इस दिशा में वर्तमान मुख्यमंत्री (बिहार) ने दूसरी, 'हरित क्रांति' योजना लागू करने के लिए कृत संकल्पित है ।ताकि कृषि क्षेत्र में निरंतर विकास हो सके।

वर्तमान कोरोना(COVID-19) संकट के कारण एक ओर जहां इस महामारी से लोग भयभीत हैं, वहीं दूसरी ओर दूसरे प्रांतों से रह रहे बिहारी मजदूरों को अपने घर वापस आ जाने से कृषि मजदूरों की समस्या का भी समाधान हो गया है जिससे इन श्रमिक बलों के कारण कृषि क्षेत्र के साथ-साथ अन्य विकासात्मक कार्यों में भी आशातीत सफलता मिलने की संभावना है। यदि सरकार किसान और मजदूर सही ढंग से कृषि कार्य के प्रति प्रयत्नशील होंगे तो कृषि क्षेत्र में बहुत ही आशातीत सफलता मिलेगी, जिसकी कल्पना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, डॉ.लोहिया, कर्पूरी ठाकुर ,जगरनाथ मिश्रा जैसे समाज-सुधारको, राष्ट्र नेताओं ने की थी. उसको पूरा करने का यह एक सुनहरा अवसर है। आवश्यकता इस बात की है कि इसे धरातल पर कैसे सार्थक रूप से प्रयोग करें, ताकि कृषि क्षेत्र में अधिक स्वावलंबी और सबल हो सके, जो कि समय की मांग है।